जो वादी को सिद्ध करने के लिये अभिमत है, वह 'अभिप्रेत' होता है।

अभेदस्वभाव

० गुणगुण्याद्येकस्वभावादभेदस्वभावः।

(आ.प. 113)

गुण और गुणी का एक स्वभाव होने से 'अभेदस्वभाव' है।

अमूर्त

० जे खलु इंदियगेज्झा विसया जीवेहि होंति ते मुत्ता।

(पंचा. 89)

जो पदार्थ जीवों के इन्द्रियग्राह्य विषय हैं, वे मूर्त होते हैं।

० रूपादिगुणविरहाद् अमूर्ताः।

(स.सि. 5/39/602)

रूप आदि गुण से रहित होने से (पदार्थ) 'अमूर्त' होते हैं।

अमूर्तत्व

० अमूर्तस्य भावोऽमूर्तत्वं रूपादिरहितत्वम्।

(आ.प. 104)

अमूर्त के भाव को अर्थात् स्पर्श, रस, गन्ध, वर्ण से रहितपने को 'अमूर्तत्व' कहते हैं।

अयथार्थ ज्ञान के भेद

० अयथार्थं च विपर्ययसंशयाऽनध्यवसायाः।

(भि.न्या. 1/11)

अयथार्थ ज्ञान के तीन भेद हैं--विपर्यय, संशय और अनध्यवसाय।

अयुतसिद्धत्व

० वैशेषिकशास्त्रे हि प्रसिद्धम्--'अपृथगाश्रय-वृत्तित्वम् अयुतसिद्धत्वम्'।

(आप्त. 44, पृ. 110)

वैशेषिक शास्त्र में प्रसिद्ध है --अपृथक् (रूप से एक) आश्रय में रहना 'अयुतसिद्ध'पना है' (अर्थात् जिन दो पदार्थों) की अभिन्न (यानी एक) आश्रय में वृत्ति, स्थिति होती है, वे 'अयुतसिद्ध' हैं।

अयुतसिद्धि

० .....समवर्तित्वलक्षणसमवायभाजाम् अयुतसिद्धि-रेव, न पृथग्भूतत्वम् इति।

(पंचा.त.प्र. 50)

(अनादि-अनन्त) सहवृत्ति होना --यही 'समवाय' है, ऐसा समवाय जिनमें (जैसे--द्रव्य व गुण में) है, वहां उनकी अयुतसिद्धि ही है, अर्थात् उनका कभी भी पार्थक्य नहीं है।

अयोगव्यवच्छेद

० विशेषणसंगतैवकारोऽयोगव्यवच्छेदबोधकः। यथा --शंखः पाण्डुर एवेति।
अयोगव्यवच्छेदो नामउद्देश्यतावच्छेदकसमा-नाथ-करणाभावाप्रतियोगित्वम्।

(स.भं.त. 39)

विशेषण से अन्वित एवकार अयोगव्यवच्छेदक होता है। जैसे--शंख पाण्डुर (सफेद) ही होता है। अयोगव्यवच्छेद से तात्पर्य है-- उद्देश्य-तावच्छेदक के समानाधिकरण अभाव का प्रतियोगी न होना।

(द्रष्टव्य : अन्ययोगव्यवच्छेद)

अर्थ (अभिधेय)

० अर्थः पुनरनेकशब्दसम्बन्धेन अभिधीयमानो वस्तुतया एकोऽभिधेयः।

(पंचा.त.प्र. 2)

'अर्थ' यानी अनेक शब्दों के सम्बन्ध से कहा जाने वाला वस्तुरूप से एक पदार्थ।

० 'ऋ गतौ', अर्यते गम्यते ज्ञायत इत्यर्थः।

(विशे.भा.,शि.हि.वृ. 80)

अर्थ शब्द गत्यर्थक 'ऋ' धातु से बना है, जो ज्ञात होता है, वह 'अर्थ' होता है।

० अर्थः शब्दस्याभिधेयम्।

(षोड.वृ. 13/4)

शब्द के वाच्य को 'अर्थ' कहा जाता है।

० अर्थो वाक्यस्य भावार्थः।

(ज्ञा.सा.वृ. 27/5)

वाक्य के वाच्य को 'अर्थ' कहा जाता है।

अर्थ (ज्ञेय)

० अर्थः अर्थक्रियासमर्थः प्रमाणगोचरो भावः द्रव्य-पर्यायात्मकः।

(न्या.कु. 2/7)

अर्थक्रिया-समर्थ, द्रव्य-पर्यायात्मक प्रमाण-दृष्ट भाव (पदार्थ) 'अर्थ' है।

अर्थ (द्रव्य)

० *दव्वाणि गुणा तेसिं पज्जाया अट्ठसण्णया* भणिया।

(प्र.सा. 1/87)

द्रव्य, गुण और पर्यायों को 'अर्थ' संज्ञा से कहा जाता है। (अर्थात् द्रव्य, गुण, पर्याय–इन तीनों की 'अर्थ' संज्ञा है।)

० प्रतिक्षणं-स्थित्युदयव्ययात्मतत्त्वव्यवस्थं सदिहार्थ-रूपम्।

(युक्त्य. 48)

'अर्थ' का रूप प्रतिक्षण स्थिति, उदय और व्ययरूप तत्त्वव्यवस्था को लिये हुए होता है।

० अनेकपर्यायकलापभाजोऽर्थाः।

(तत्त्व.भा.वृ. 9/6,)

'अर्थ' अनेक पर्यायों के समूह वाला होता है।

० अर्यते इत्यर्थः, निश्चीयते इति यावत्।

(स.सि. 1/2/10)

जिसका निश्चय किया जाता है अर्थात् जो ज्ञान के द्वारा जाना जाता है, उसे 'अर्थ' कहते हैं।

० परापरपर्यायावाप्ति-परिहारस्थितिलक्षणोऽर्थः।

(प्र.सं.वृ. 7/67)

जो एक (नवीन) पर्याय की प्राप्ति (उत्पाद), पूर्व पर्याय का विनाश (व्यय) और स्थिति (ध्रौव्य) से सहित होता है, वह 'अर्थ' (द्रव्य) कहलाता है।

० तद्द्रव्यपर्यायात्मार्थः।

(लघी. 2/7)

'अर्थ' द्रव्यपर्यायात्मक होता है।

० इयर्ति पर्यायान्, अर्यते वा तैः, इत्यर्थो द्रव्यम्।

(रा.वा. 1/17)